Cambridge IGCSE

Cambridge International Examinations
Cambridge International General Certificate of Secondary Education

CANDIDATE NAME			
CENTRE NUMBER		CANDIDATE NUMBER	

8099447559

HINDI AS A SECOND LANGUAGE **0549/01**

Paper 1 Reading and Writing **February/March 2018**

2 hours

Candidates answer on the Question Paper.

No Additional Materials are required.

READ THESE INSTRUCTIONS FIRST

Write your Centre number, candidate number and name on all the work you hand in.
Write in dark blue or black pen.
Do not use staples, paper clips, glue or correction fluid.
DO **NOT** WRITE IN ANY BARCODES.

Answer **all** questions.

The number of marks is given in brackets [ ] at the end of each question or part question.

The syllabus is approved for use in England, Wales and Northern Ireland as a Cambridge International Level 1/Level 2 Certificate.

This document consists of **13** printed pages and **3** blank pages.

KI 147698/3
© UCLES 2018

CAMBRIDGE International Examinations

[Turn over

खंड 1

अभ्यास 1 प्रश्न 1–5

निम्नलिखित लेख 'ज़किया हुसैन के साथ रसोई में' पढ़िए और दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

'ग्रेट ब्रिटिश बेक ऑफ' की विजेता ज़किया हुसैन ने यूके में धूम मचाई।

यूके में हुई लोकप्रिय दूरदर्शन पाक-प्रतियोगिता, 'ग्रेट ब्रिटिश बेक ऑफ' में प्रथम स्थान जीतने वाली महिला, ज़किया हुसैन समाचार पत्रों में चर्चा का विषय बनी हुई हैं। ज़किया मूलत: बांग्लादेशी हैं। वे पाँच वर्ष की उम्र में अपने परिवार के साथ यूके के ल्यूटन शहर आईं जहाँ उनका बचपन बीता। विवाह के बाद अपने पति और तीन बच्चों के साथ वे आजकल यहाँ के लीड्स शहर में रहती हैं।

अपने बचपन की याद करते हुए उन्होंने बताया कि जब वे छोटी थीं, उनकी माँ ने रसोई घर के ओवन में कभी कुछ नहीं पकाया था। वे तो ओवन का उपयोग एक अलमारी की तरह करके उसमें दाल और मसाले आदि रखती थीं। पाक-विद्या के प्रति उनकी अभिरुचि की शुरुआत बारह वर्ष की उम्र में माध्यमिक विद्यालय में गृह-विज्ञान पढ़ने के बाद हुई। तबसे लगा शौक उनके जीवन में अभी तक बरकरार ही नहीं है, बल्कि उसके चलते उनके जीवन की दिशा ही बदल गई है। इसके पहले वे जनसंचार के क्षेत्र में पत्रकार और संवाददाता के रूप में काम करती थीं।

दूरदर्शन पर पाक-प्रतियोगिता में प्रतियोगियों को केक और बिस्कुट बनाते देखकर उन्हें लगा कि वे भी इस प्रकार के व्यंजन आसानी से बना सकती हैं। अपने खाना पकाने के शौक को आगे बढ़ाने के ख़्याल से उन्होंने उस प्रतियोगिता में भाग लेने का निर्णय किया। आठ सप्ताह तक चलने वाली प्रतियोगिता में भाग लेकर उन्होंने अपनी मौलिक कल्पना, को केक के रूप में प्रस्तुत करने की निपुणता और लगन से केवल दर्शकों का ही नहीं, बल्कि निर्णायकों का भी मन मोह कर 'ग्रेट ब्रिटिश बेक ऑफ' का प्रथम पुरस्कार जीता। उनका नाम और तस्वीर समाचार पत्रों की सुर्खियों में आए।

उन्होंने 'ज़किया की रसोई' नामक पाकविद्या की एक किताब प्रकाशित की है जिसमें अपने मित्रों और परिवार के लिए पकाए गए प्रिय व्यंजनों को बनाने की विधि लिखी है। आजकल वे 'ज़किया का इतिवृत्त' शीर्षक दूरदर्शन प्रदर्शन में भाग ले रही हैं। इस धारावाहिक कार्यक्रम के दौरान वे अपनी मातृभूमि, बांग्लादेश की यात्रा करके वहाँ की मौलिक पाकविधि को दूरदर्शन पर प्रस्तुत करने और अपनी जड़ों से जुड़ने वाली हैं। उनकी किताब में केक बनाने के लिए कुछ मूलभूत सिद्धांत, जैसे ओवन का सही तापमान, सामग्री की सही माप आदि का ज़िक्र है जिसके अनुसार कोई नौसिखिया भी बेझिझक स्वादिष्ट केक बनाने को प्रोत्साहित हो सकता है। उनका कहना है कि इस किताब में कुछ व्यंजन बनाना अत्यंत सरल है तो कुछ कठिन भी, पर सभी सफलता पूर्वक बनाए जा सकते हैं। सफलता केवल अभ्यास, अभ्यास और अभ्यास के द्वारा ही संभव हो सकती है।

© UCLES 2018

1 ज़किया हुसैन कहाँ रहती हैं?

.... [1]

2 पाकविद्या में उनकी रुचि कैसे आरम्भ हुई?

.... [1]

3 उन्होंने पाक-प्रतियोगिता में भाग लेने का निश्चय क्यों किया?

.... [1]

4 बांग्लादेश की यात्रा पर जाने के दो कारण लिखिए।

....

.... [2]

5 खाना बनाने में कुशलता के लिए सबसे अधिक क्या आवश्यक है?

.... [1]

[अंक: 6]

© UCLES 2018

अभ्यास 2 प्रश्न 6

लतिका शर्मा के बारे में निम्नलिखित सूचना पढ़कर अपने को लतिका मानकर अगले पृष्ठ पर दिए गए आवेदन पत्र को भरिए।

कहानी-लेखन कार्यशाला में भाग लेने का एक सुनहरा अवसर

कहानी-लेखन कार्यशाला
कोलकाता विद्या भवन
114 जवाहर लाल नेहरू रोड, चौरंगी कोलकाता 700003
दूरभाष 00-33-27748952, 00-33-27572835
ई मेल: klk@gmail.in

कहानी लेखन में अभिरुचि रखने वाले स्कूली बच्चे प्रसिद्ध कथाकार द्वारा संचालित कार्यशाला में कहानी-लेखन की रचना-प्रक्रिया सीखने के लिए आवेदन करें।

स्कूली बच्चों में कहानी-लिखने का उत्साह बढ़ाने के लिए एक कहानी-लेखन कार्यशाला आयोजित की जा रही है। कार्यशाला के संचालक प्रसिद्ध लेखक नरेश पाठक का कहना है कि इस कार्यशाला में स्कूली छात्रों को कहानी लिखने की कला संबंधी जानकारी मिलेगी। प्रथम सत्र में नरेश पाठक अपनी प्रिय कहानी का पाठ करने के बाद अपनी रचना प्रक्रिया के बारे में बतायेंगे। उसके बाद छात्रों को उनसे प्रश्न पूछने का अवसर तथा सफल कहानी के तत्त्वों की जानकारी मिलेगी। दूसरे सत्र में कुछ विद्यार्थी अपनी लिखी हुई कहानी का पाठ करेंगे जिसके बाद उसमें सुधार लाने के सुझाव दिए जाएंगे। पश्चिम बंगाल सरकार के शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित यह कार्यशाला पूर्णतः निःशुल्क है। आयोजनकर्ता उन बच्चों को कार्यशाला में बुलाना चाहते हैं जो कहानी लेखन के प्रति विशेष रुचि रखते हैं। आवेदन पत्र के साथ अपनी लिखी मौलिक कहानी संलग्न करें।

लतिका की उम्र 16 वर्ष है। प्राथमिक विद्यालय से ही उसे कहानी लिखने का शौक है| उसकी लिखी कहानियाँ पिछले तीन वर्षों से लगातार विद्यालय की वार्षिक पत्रिका में प्रकाशित हुई हैं। इस वर्ष उसकी कहानी को पत्रिका की सर्वश्रेष्ठ कहानी का पुरस्कार मिला है। लतिका शर्मा आर्य कन्या विद्यालय की छात्रा है। स्कूल की छुट्टी तीन बजे होती है। उसके बाद वह संगीत सीखने जाती है। वह स्कूल के सांस्कृतिक आयोजनों में हमेशा भाग लेती है। घर लौटने पर गृहकार्य करने के बाद कुछ और करने के लिए यथेष्ट समय नही बचता। लिहाज़ा, सप्ताह के दौरान वह कार्यशाला में नहीं जाना चाहती। सप्ताहांत में वह दोपहर को नृत्य सीखती है इसलिए सुबह का समय सर्वाधिक उचित है। वह 25 गुरुसदय रोड, कोलकाता 700004 के फ्लैट नंबर 3बी में रहती है। उसका ई-मेल है latika.s@gmail.com और उसका टेलिफोन नम्बर 033-29836376 है।

© UCLES 2018

आप अपने को लतिका मानकर नीचे दिए गए आवेदन पत्र को भरिए।

कहानी-लेखन कार्यशाला
कोलकाता विद्या भवन

114 जवाहर लाल नेहरू रोड, चौरंगी, कोलकाता 700003
दूरभाष 00-33-27748952, 00-33-27572835
ई मेल: klk@gmail.in

आवेदक का नाम: लतिका शर्मा

(सही का निशान ✓ लगाएं) आयु 14–15 ☐ 16–17 ☐ 18–19 ☐

ई-मेल: latika.s@gmail.com

पूरा पता:

विद्यालय का नाम:

निम्नलिखित: विकल्पों के माध्यम से बताइए कि आप कब उपलब्ध हैं। [कोष्ठक में सही का निशान लगाएं]

☐ सप्ताह के दौरान।

☐ सप्ताहांत में।

निम्नलिखित अवधियों में से उचित अवधि चुनें। [कोष्ठक में सही का निशान लगाएं]

☐ सुबह 9 बजे से दोपहर 12 बजे तक

☐ दोपहर 3 बजे से शाम 6 बजे तक

कहानी लेखन में रुचि और अपनी उपलब्धियों से संबन्धित कोई 2 जानकारियाँ दीजिए

....

....

....

[अंक: 7]

अभ्यास 3 प्रश्न 7–9

'पत्र-लेखन कला का भविष्य' शीर्षक निम्नलिखित लेख पढ़े और अगले पृष्ठ पर दिए गए शीर्षकों के अंतर्गत नोट बनाएं।

पत्र-लेखन की परम्परा सदियों पुरानी है। अपनी आंतरिक और अंतरंग भावनाएं जिनको कभी-कभी मौखिक रूप से कहना कठिन होता है, पत्र के द्वारा सम्प्रेषित की जा सकती हैं। पत्र भेजने और पाने के अनुभव रोमांचक होते हैं। जहाँ पत्र के लेखक को अपने मन के भाव अभिव्यक्त करने की छूट होती है, वहाँ उसे पाने वाले को लेखक से मानसिक रूप से जुड़ने का अवसर मिलता है जो दोनों की भौतिक दूरियों को दूर कर देता है। पत्र पाने का इंतज़ार करने का अनुभव अत्यंत उत्कंठा भरा होता है। लिफ़ाफ़ा हाथ में लेने और उसे खोलकर पढ़ने के बीच के समय में जो अधीरता और आशा की मिलीजुली अनुभूति होती है उसका वर्णन तो पत्र पाने वाला ही कर सकता है। पत्र के माध्यम से उसके लेखक के व्यक्तित्व और जिसे पत्र लिखा गया उसके साथ सम्बन्ध की गहराई की झलक मिलती है।
प्रसिद्ध इतिहासकार हिलेनीकस के अनुसार हस्तलिखित पत्र का सबसे पुराना उदाहरण पर्शिया की महारानी अटोसा के हाथ का लिखा पत्र है जो ईसा से लगभग 500 वर्ष पूर्व लिखा गया था। पर्शिया के राजा ने संदेशवाहक-घुड़सवार द्वारा पत्र भेजने की परम्परा चलाई। पत्र को लिफ़ाफे में बंद करके नहीं भेजा जाता था और पत्र पाने वाले को उसका मूल्य चुकाना पड़ता था। पत्र के संदेश की गोपनीयता बनाए रखने के लिए उसे तह कर लाल रंग की मोम पिघला कर उस पर अंगूठी से मुहर लगाते थे। खाड़ी देशों में कबूतर पत्र-वाहक का काम करते थे। अपने वर्तमान रूप में लिफ़ाफे के ऊपर डाक टिकट लगाने और डाकिया द्वारा पत्र पहुंचाने का तरीका सन 1840 में बर्तानिया की महारानी विक्टोरिया ने शुरु किया।
प्रसिद्ध व्यक्तियों द्वारा लिखे गये पत्र तत्कालीन सामाजिक और सांस्कृतिक इतिहास की धरोहर होते हैं। भारत के प्रथम प्रधान मंत्री स्वर्गीय पंडित जवाहर लाल नेहरू द्वारा ब्रिटिश राज के समय जेल से अपनी तेरह वर्षीया बेटी इन्दिरा (जो आगे चलकर भारत की प्रधान मंत्री बनीं) को लिखे गए 196 पत्र 'विश्व इतिहास की झलक' के नाम से प्रकाशित हुए। ये पत्र केवल विश्व के इतिहास की झलक ही नहीं बल्कि एक विश्वप्रसिद्ध पिता का अपनी इकलौती बेटी के प्रति गहरा प्यार भी दर्शाते हैं। नेहरू जी उस समय ब्रिटिश राज के विरुद्ध सत्याग्रह करने के कारण जेल में थे। उन्होंने अपनी बेटी के जन्मदिन पर लिखा कि जेल से वे उन्हें जन्मदिन की कोई सौगात नहीं भेज सकने की कमी को पत्र के माध्यम से अपने हृदय से निकले भावों को लिखकर पूरा कर रहे हैं।
वर्तमान समय में स्मार्ट फोन, ई-मेल, व्हाट्सऐप्प आदि के प्रचलन से पत्र लिखने की बहुमूल्य परम्परा का भविष्य संकट में है। ई-मेल, व्हाट्सऐप्प आदि द्वारा भेजे गए संवाद पढ़ने के बाद मिटा दिए जाते हैं जबकि पत्र-लेखन साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है। आज जीवन की आपाधापी में उलझे लोगों के पास अपने विचारों और मनोभावों को पत्र के रूप में लिखने का ना तो समय है और ना ही अभिरुचि। यदि यही स्थिति रही तो साहित्य की यह प्रभावशाली विधा धीरे-धीरे लुप्त हो जाएगी।

अभ्यास 3 प्रश्न 7–9

आपके स्कूल में एक निबन्ध प्रतियोगिता आयोजित की जा रही है। प्रतियोगिता का विषय है 'पत्र-लेखन कला का महत्त्व और भविष्य'। इस लेख में से नीचे दिए गए प्रत्येक शीर्षक के अंतर्गत नोट लिखें जिसपर आपका निबन्ध आधारित होगा।

7 पत्र-लेखन के उद्देश्य

- .... [1]
- .... [1]

8 पत्र भेजने के पुराने और आधुनिक तरीके के अंतर

- .... [1]
- .... [1]

9 प्रसिद्ध व्यक्तियों के लिखे पत्रों का महत्त्व

- .... [1]
- .... [1]
- .... [1]

[अंक: 7]

अभ्यास 4 प्रश्न – 10

निम्नलिखित आलेख 'क्या स्वस्थ जीवन के लिए निद्रा ज़रूरी है?' के आधार पर निद्रा से होने वाले लाभ और अनिद्रा से संभावित दुष्परिणाम की मुख्य बातों का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।
आपका सारांश 100 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
संगत बिन्दुओं के समावेश के लिए 6 अंक और भाषिक अभिव्यक्ति के लिए 4 अंक निर्धारित हैं। पाठांश से वाक्य उतारना उचित नहीं है।

पौष्टिक भोजन, स्वच्छ वायु और शारीरिक व्यायाम के साथ मनुष्य के जीवित रहने के लिए निद्रा ज़रूरी है। नींद की गुणवत्ता से व्यक्ति के स्वास्थ्य का अंदाज़ा लगाया जा सकता है।
निद्रा या नींद एक ऐसी अवस्था है जिसमें शारीरिक और मानसिक गतिविधियाँ कम हो जाती हैं और आदमी की चेतना लगभग स्थगित हो जाती है। शरीर और मन को आराम देने की स्थिति को 'नींद' का नाम देते हैं। सोए हुए आदमी के शरीर के तापमान, रक्तचाप और दिल की धड़कन की गति में गिरावट की वजह से उसके हृदय को कम मेहनत करनी होती है जिसके कारण हृदय को आराम करने का मौका मिल जाता है। 'चैन की नींद सोना' कथन से सोने से शरीर और मन को मिलने वाले आराम का पता चलता है। इससे स्मरण शक्ति को भी लाभ होता है।
नैशनल स्लीप फाउंडेशन के तहत स्वस्थ रहने के लिए आवश्यक नींद की मात्रा पर शोध किया गया। हर आदमी की नींद की ज़रूरत एक सी नहीं होती जो उसकी उम्र तथा जीवन शैली पर निर्भर करती है। उनके अनुसार साधारण तौर से जन्मजात बच्चे को 14–17 घंटे और पूर्ण वयस्क व्यक्ति को 7–9 घंटे सोने की ज़रूरत है। इसके साथ-साथ नींद की गुणवत्ता महत्त्वपूर्ण है। लगातार कच्ची नींद के कारण रात को बार-बार नींद टूटने से मोटापा, हृदय रोग, उच्च रक्तचाप और मधुमेह जैसी बीमारियाँ लगने का खतरा रहता है। शरीर की रोग से लड़ने की ताकत में कमी हो जाने के कारण सर्दी, ज़ुकाम आदि जल्दी पकड़ सकते हैं। मानसिक तनाव अनिद्रा का कारण और परिणाम दोनों ही हो सकते हैं। मानसिक परेशानियों से गुज़रने वाले व्यक्ति को नींद ना आने की समस्या हो सकती है। एक लम्बे और स्वस्थ जीवन के लिए पक्की नींद ज़रूरी है। सामान्य नियम यह है कि यदि आप सुबह उठने पर थकावट का अनुभव करते हैं और सारा दिन नींद आती रहती है तो इसका मतलब है कि रात को आपकी नींद पूरी नहीं हुई थी।
बहुत अधिक समय के लिए सोना बहुत कम समय के लिए सोने के समान ही हानिकारक है। दोनों का सम्बन्ध अकाल मृत्यु से जोड़ा जाता है। सामान्यत: एक व्यक्ति अपने जीवन का एक तिहाई हिस्सा सोकर बिताता है। केवल तीन से चार घंटों के लिए सोने वाले लोग जैसे नेपोलिअन बोनापार्ट, फ्लोरेंस नाइटिंगेल, मार्गरेट थैचर, नरेन्द्र मोदी आदि इसका अपवाद हैं। थामस एडीसन नींद में बिताए समय को समय की बर्बादी ही समझते थे। वाणी, याददाश्त, सोचने की शक्ति जैसी दिमागी सक्रियता बनाए रखने के लिए सोना बहुत ज़रूरी है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि दिमाग के विकास में निद्रा का महत्त्वपूर्ण योगदान है।
नींद की कमी से होने वाले परिणाम पर विचार करने से उसके योगदान को समझा जा सकता है। नींद की कमी से दिमाग की काम करने की ताकत पर गहरा असर होता है। केवल एक रात की नींद पूरी नहीं होने के फलस्वरूप चिड़चिड़ापन, बिना कारण गुस्सा, भुलक्कड़पन और कमजोरी का अनुभव होता है। शोध के अनुसार मानसिक एकाग्रता में भी कमी आ सकती है।
नींद की कमी से खर्राटे लेने, स्वासरोध, अनिद्रा आदि की समस्याएँ शुरू हो सकती हैं जिसके कारण दिन के समय में सोए रहने की प्रवृत्ति होती है।

पूरी रात गहरी नींद सोने वाला व्यक्ति सुबह ताज़गी और कर्मठता का अनुभव करता है। हवादार सोने का कमरा, आरामदेह बिस्तर और सोने का नियमित समय अच्छी नींद में सहायता कर सकते हैं। साथ ही स्मार्टफोन, आई पैड जैसे विद्युत् सक्रिय उपकरण नींद में ख़लल डाल सकते हैं। अतएव उन्हें सोते समय बंद करके रखना चाहिए।

निद्रा से लाभ और अनिद्रा से सम्भावित हानि:

[अंक: 10]

खंड 2

अभ्यास 5 प्रश्न 11–17

निम्नलिखित आलेख 'हाथी - सबसे बड़ा स्थल स्तनपायी पशु' को ध्यानपूर्वक पढ़िए और पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

पशुओं का वर्गीकरण स्तनपायी, रेंगनेवाले, पक्षी, जलस्थलचर अर्थात पानी और भूमि दोनों पर रहने वाले और मछली में किया जाता है। अधिकांश स्तनपायी पशु अपने बच्चे को जन्म देते हैं और सभी अपने स्तन की दुग्धग्रंथि के दूध से उनका पोषण करते हैं। पक्षियों की तरह गर्म खून वाले होने के परिणामस्वरूप बाहरी वातावरण के तापमान के बदलने से उनके शरीर के तापमान में परिवर्तन नहीं होता है। इसका कारण उनके शरीर पर होने वाले गर्म रोएं हैं। अधिकांश स्तनपायी जानवर अपने गर्भ में पूर्ण विकसित हो जाने पर बच्चे को जन्म देते हैं। कुछ स्तनपायी जानवर, जैसे मोनोट्रेम और प्लैटीपस रेंगनेवाले जानवरों की तरह अण्डे देते हैं। इसके बावज़ूद उनकी अन्य प्रकृति, जैसे अपने स्तन के दूध से नवजात का पालन पोषण, गर्म खून एवं शरीर पर रोयें होना उन्हें स्तनपायी पशुओं की श्रेणी में रखता है। बड़े और छोटे कंगारू की गणना भी इन्हीं विशेषताओं के कारण स्तनपायी पशुओं में की जाती है। अन्य स्तनपायी पशुओं और कंगारू में यह अंतर है कि उनके बच्चे अर्धविकसित अवस्था में पैदा होते हैं और पूरी तरह से पनप कर बाहरी वातावरण में विचरण करने योग्य होने तक अपनी माँ के पेट की थैली में माँ के स्तन से दूध पीकर रहते हैं।

अफ्रीकी हाथी भूमि पर विचरण करने वाला सबसे बड़ा स्तनपायी जानवर है। उसकी ऊंचाई लगभग 4 मीटर और वज़न 7000 किलोग्राम तक होता है। जन्म के समय हाथी के बच्चे का वजन 77–113 किलोग्राम होता है। हाथी की शारीरिक रूपरेखा में उसकी सूंड, दाँत, कान और खंभे जैसी टांगें विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। वे अपनी लम्बी सूंड का उपयोग श्वास लेने, पानी पीने और चीज़ों को उठाने के लिए करते हैं। सामान्यत: उनके 26 दाँत होते हैं जिनमें से दो दाँत आगे की तरफ़ बढ़े होने के कारण प्रमुख रूप से दिखाई देते हैं। उनका उपयोग वे चीज़ों को सरकाने, खुदाई करने आदि के औज़ार के रूप में करते हैं। पंखे की आकृति वाले बड़े-बड़े कान उनके शरीर के तापमान को नियंत्रित करने के काम आते हैं और स्तम्भ की तरह लगने वाली टांगों में उनके भारी शरीर का वज़न ढोने की ताकत होती है। उनका प्राकृतिक आवास जंगल, मरुस्थल और दलदल है। वे प्राय: पानी के पास रहना पसंद करते हैं। सभी हाथी तृण-भक्षी होते हैं।

हाथी की अफ्रीकी और एशियाई नामक दो मुख्य प्रजातियाँ हैं। अफ्रीकी हाथी के कद और कान एशियाई हाथी से कहीं अधिक बड़े होते हैं। जंगल में रहने वाले दूसरे पशु उनसे दूरी बनाए रखते हैं। बाघ, चीता और जंगली कुत्ते हाथी के बछड़ों का शिकार करने की फ़िराक में रहते हैं। उनकी देखभाल करने के लिए मादा हाथी (हथिनी) कई हथिनियों और उनके बछड़ों का एक पारिवारिक समूह बनाकर रहती हैं। उनमें से सबसे बड़ी हथिनी समूह की मुखिया होती है। वे अपने बछड़ों की देखभाल तीन साल या जब तक वे अपनी देखभाल स्वयं करने लायक नहीं हो जाते हैं, करती हैं।

वयस्क होने के बाद नर हाथी अपने पारिवारिक समूह को छोड़कर किसी अन्य हथिनी के साथ रमण करता है। जंगल में रहने वाले हाथी औसतन 70 वर्ष तक जी सकते हैं। वे स्पर्श, दृष्टि, गंध, और ध्वनि के माध्यम से आपस में संवाद करते हैं। उनमें अपने प्रति जागरूकता दिखाई देती है। अपने समूह के प्रति उनकी सहानुभूति किसी हाथी के घायल होने या मरने पर उनके व्यवहार से स्पष्ट दिखाई देती है।

एशियाई देशों में हाथी कामकाज़ी जानवर के रूप में भारी बोझा ढोने के काम आता है। पुराने समय में राजा-महाराजा शांति और युद्ध के समय हाथी की सवारी करते थे। राजस्थान की हवेलियों और महलों के

© UCLES 2018

भित्तिचित्रों, लोक साहित्य और धार्मिक ग्रंथों में सजे-सजाए हाथियों के अनेक कलात्मक उदाहरण देखने को मिलते हैं। वर्तमान समय में चिड़ियाघर में प्रदर्शन और सरकस में मनोरंजन के लिए हाथियों का उपयोग एक ऐसा विवादास्पद मसला है जिसका विरोध पशु कल्याण समितियाँ करती हैं।
हाथी की आबादी को सबसे अधिक ख़तरा हाथीदाँत के व्यापार के लिए किए गए अवैध शिकार से है। इसके अलावा जंगलों के काटे जाने से उनके नैसर्गिक आवास का नष्ट होना और स्थानीय लोगों के साथ संघर्ष भी उनके अस्तित्व के लिए संकट पैदा करता है।

कृपया प्रश्न 11 से 14 तक के उत्तर सही या ग़लत के कोष्ठक में ✓ का निशान लगाकर दीजिए। यदि वाक्य ग़लत है तो उसे पाठांश के आधार पर ठीक कीजिए।

	सही	ग़लत
उदाहरण – सभी स्तनपायी पशु बच्चे को जन्म देते हैं। **औचित्य – अधिकांश स्तनपायी पशु बच्चे को जन्म देते हैं।**	☐	✓
11 कंगारू के बच्चे माँ के गर्भ में पूर्ण विकसित होते हैं।	☐	☐
12 अफ्रीका और एशिया के हाथी देखने में एक से होते हैं।	☐	☐
13 हाथी की सूंड केवल श्वास लेने के काम आती है।	☐	☐
14 हाथी अपने कानों से शरीर का तापमान नियंत्रित करते हैं।	☐	☐

अब निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

15 गर्म खून वाले पशु की क्या विशेषता है?

....

16 हाथियों की संख्या पर सबसे बड़ा खतरा किससे है?

....

17 पशु कल्याण समितियाँ किस बात के विरुद्ध हैं?

....

[अंक: 10]

© UCLES 2018

अभ्यास 6 प्रश्न 18

प्रदूषण

स्थानीय समाचार पत्र के लिए आप अपने शहर में फैले प्रदूषण पर एक रिपोर्ट लिखें। आपकी रिपोर्ट विषय से संबंधित जानकारी पर केन्द्रित होनी चाहिए।

आपकी रिपोर्ट 150 से 200 शब्दों से अधिक नहीं होनी चाहिए।

लिखित विवरण पर अंर्तवस्तु के लिए 10 अंक और सटीक भाषा के लिए भी 10 अंक निर्धारित हैं।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

© UCLES 2018

[अंक: 20]

BLANK PAGE

BLANK PAGE

© UCLES 2018

BLANK PAGE

Permission to reproduce items where third-party owned material protected by copyright is included has been sought and cleared where possible. Every reasonable effort has been made by the publisher (UCLES) to trace copyright holders, but if any items requiring clearance have unwittingly been included, the publisher will be pleased to make amends at the earliest possible opportunity.

To avoid the issue of disclosure of answer-related information to candidates, all copyright acknowledgements are reproduced online in the Cambridge International Examinations Copyright Acknowledgements Booklet. This is produced for each series of examinations and is freely available to download at www.cie.org.uk after the live examination series.

Cambridge International Examinations is part of the Cambridge Assessment Group. Cambridge Assessment is the brand name of University of Cambridge Local Examinations Syndicate (UCLES), which is itself a department of the University of Cambridge.